VISION IAS

www.visionias.in

VISION IAS
M N 12 SEP 2022 No. 3
RECEIVED

SUBJECT:		Test Code:	2	1	2	1
Name of Candidate	MANISHA					
Medium Hindi/Eng.	HINDI	Registration Number	6 2	7 8	6 2	
Center	Delhi	Date	12	09	20	22

INDEX TABLE

Q. No.	Page No.	Maximum Marks	Marks Obtained

Total Marks Obtained:

Remarks :

INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न–पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
2. All questions are compulsory.
   सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
   प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
4. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
   प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न–सह–उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिए गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
5. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
   प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
6. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
   उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

EVALUATION INDICATORS

1. Contextual Competence
2. Content Competence
3. Language Competence
4. Introduction Competence
5. Structure - Presentation Competence
6. Conclusion Competence

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

" संपत्ति वह है जिसे आप देख नहीं पाते "

संपत्ति से सामान्यत: समझा जाता है जो भौतिक वस्तुओं, सामग्री, घर व अन्य चीजें जिसे व्यक्ति द्वारा अपनी मेहनत के माध्यम से अर्जित व संग्रहित किया गया है। और ऐसा मान लिया जाता है कि भौतिक संपत्तियों की अधिकता मनुष्य को सुख-सुविधाएँ एवं मानसिक शांति प्रदान करेंगी। लेकिन ऐसा वास्तव में होना आवश्यक नहीं है. क्योंकि अगर ऐसा होता तो सबसे अधिक धनवान व्यक्ति या देश में सर्वाधिक शांति पाई जाती।

हाल ही में भारतीय अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत द्वारा आत्महत्या कर ली गई। उस समय उनके बैंक अकाउंट में लाखों-करोडों रूपये मौजूद थे। साथ भी बड़ा घर व बेशुमार संपत्ति भी उनके पास

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

थी। तो इतनी अधिक धन-दौलत व प्रसिद्धी के बाद यह बात उठती है कि फिर उन्होंने आत्महत्या क्यों की। अगर भौतिक संपत्ति ही वास्तविक धन है तो इसके अर्जन के बाद मनुष्य के जीवन में शांति व पूर्णता का अहसास क्यों प्राप्त नहीं होता।

इसी घटना के संदर्भ में यह प्रश्न भी उभर आता है कि वास्तव में हम जिस सुख-समृद्धि व भौतिकतावाद को संपत्ति मान रहे है वह संपत्ति है भी या नहीं। अगर भौतिक वस्तुएँ व सुविधाएँ वास्तविक संपत्ति नहीं है तो प्रश्न यह भी उठता है कि "वास्तविक संपत्ति क्या है"

इस सवाल के जबाव में कहा

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

कहा जा सकता है कि वास्तविक संपत्ति वो है जो शायद हम देख नहीं पाते तथा जिसके महत्व को हम समझना भी नहीं चाहते। जैसे जो समानता की भावना एक देश के नागरिकों के द्वारा महसूस की जाती है। वह वास्तविक संपत्ति है। उदाहरण के लिए अमेरिका द्वारा जो भौतिक विकास व जीडीपी की वृद्धि दर प्राप्त की है। वह सिर्फ उसके बाहरी प्रभाव को दर्शाता है।

वास्तविकता में जब एक अश्वेत व्यक्ति यह महसूस करता है कि वो एक गोरे व्यक्ति से कमतर है तथा उसकी योग्यता व उपलब्धी के बाद भी समाज में उसे पर्याप्त सम्मान व स्थान प्राप्त नहीं होता है। तो यह घटना समाज में संपत्ति की न्यूनता को दर्शाती है। क्योंकि वास्तविक संपत्ति लोगों के मध्य समानता व सौहार्द

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

की भावना है। जिसके अभाव में कितनी भी भौतिक उपलब्धी देश के द्वारा प्राप्त की गई हो मायने नहीं रखती.

इसी संदर्भ में हम वियतनाम युद्ध का उदाहरण ले सकते है। जब फ्रांस ने वियतनाम के खिलाफ युद्ध छेड़ रखा था तथा अमेरिका भी सहयोगी के रूप में इस युद्ध में शामिल हो गया था। उस समय विश्व की दो महाशक्तियों के द्वारा उनके खिलाफ युद्ध छेड़ने के बाद भी वहां के लोगों ने हार नहीं मानी। जिस व्यक्ति का जो सामर्थ्य था तथा जो वह कर सकता है उसी के साथ वियतनाम के लोगों ने युद्ध में भाग लिया। जिसमें वियतनाम के लोगों की एकता, सामाजिक सौहार्द व राष्ट्र प्रेम की भावना तकनीक व सैनिक उपलब्धि

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

के विरुद्ध लड़ी व जीत भी प्राप्त की।

तो वास्तव में देखें तो संपत्ति हमें दिखाई नहीं देती क्योंकि अगर दिखाई देती तो वियतनाम के पास इसका अभाव दिखता तथा अमेरिका के पास अधिकता। इसी प्रकार जो पर्यावरण की सुंदरता हम अपने आस पास महसूस करते है। जिस ठंडी हवाँ में हम साँस लेते है या जो वर्षा हमें अंदर तक आनंदित कर देती है उसे भी हम देख पाते। लेकिन इनको सिर्फ हृदय से महसूस कर सकते है तथा अपने मन को प्रकृति के बीच में रहकर आनंदित कर सकते है।

बहरहाल, एक परिवार में जो व्यवहार के बच्चे के साथ किया जाता है या जो बच्चें को प्रेम, लगाव व अपनेपन का व्यवहार माता-पिता के द्वारा महसूस कराया जाता है वह है वास्तविक तोहफा जो किसी बच्चें को दिया जाना चाहिए लेकिन आज

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

के समय में फोन, वीडियो गेम या अन्य उपकरणों को तोहफे के रूप मे देकर फोर्मलिटी पूरी कर ली जाती है। जो आगे चलकर बच्चों के जीवन में अवसाद, अकेलेपन का कारण बनती है। तथा कई बार बच्चों के द्वारा आत्महत्या का कदम भी उठाया जाता है। जो आज के संदर्भ में काफी आम हो गया है. इसलिए ये मान लेना की भौतिक संपत्ति ही सबकुछ है गलत है।

अब प्रश्न यह भी उठता है कि अब भौतिकता से हमारा काम चल रहा है तो हमें वास्तविक संपत्ति की आवश्यकता ही क्यों है?। इसके जवाब में हम जापान का उदाहरण ले सकते है। जो हर साल हजारों की संख्या में भूकंप, सुनामी व अन्य प्राकृतिक आपदा से प्रभावित रहता

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

है। लेकिन इन सभी आपदाओं के बाद भी यह विश्व के सबसे उन्नत व समृद्ध देशों में से एक है। इसका कारण है जापानी लोगों में कठिनाइयों से हार न मानने की मानसिकता तथा कठिन परिस्थिति के समय में अपने देश व समाज के प्रति समर्पण की भावना। अगर ये भावना व मानसिकता वहां के लोगों में नहीं पाई जाती तो इतनी आपदाओं के कारण शायद जापान का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता। इसलिए हमें वास्तविक संपत्ति की आवश्यकता है।

इसका अपवाद भी हमारे समक्ष मौजूद है। जिसमें प्राकृतिक संसाधनों की समृद्धता व उच्च आर्थिक विकास के बाद भी यह क्षेत्र युद्ध व संघर्ष से ग्रसित है। सीरिया काफी विकसित व समृद्ध देश है लेकिन इसकी आपसी सहयोग व सौहार्द की भावना के अभाव में आज यह क्षेत्र भुखमरी, कुपोषण व युद्ध

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

का सामना कर रहा है तथा स्थिति यहाँ तक बिगड़ जाती है कि अपने ही देश की सेना द्वारा अपने नागरिकों पर गैरीय हमला करना पड़ता है। जिसमें सैकड़ो लोगों की जान चली जाती है।

भारत के सैनिकों का उदाहरण इसमें काफी प्रासंगिक है जो कारगिल क्षेत्र के -50°C तापमान में देश की सुरक्षा हेतु कार्यरत है। जो वेतन भारतीय सैनिकों को प्राप्त होता है उस वेतन मे वे आराम से बेहतर स्थिति का रोजगार किसी भी क्षेत्र में प्राप्त कर सकते है। लेकिन जो देश प्रेम की भावना उनमें विद्यमान होती है वो कठिन परिस्थिति व कम वेतन मे रहने हेतु प्रोत्साहन प्रदान करती है तथा किसी भी राष्ट्र की वास्तविक संपत्ति ये ही है। क्योंकि देश के आंतरिक भौतिक विकास का स्थायित्व बाहरी सीमा सुरक्षा पर ही निर्भर करता है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

संपत्ति के बारे में जानने के बाद अब प्रश्न यह भी उठता है कि क्या इस संपत्ति को बढ़ाया जा सकता है? तो इसका जवाब है कि हाँ इस संपत्ति को बढ़ाया जा सकता है। जिसमें विभिन्न कार्रवाई की जा सकती है जैसे- नागरिकों के मध्य समानता व सौहार्द की भावना को बढ़ावा देना, संविधान के प्रावधानों के अनुसार शासन करना तथा वंचित वर्ग के उत्थान द्वारा सभी के समावेशी विकास को बढ़ावा देना।

भारत के संदर्भ में देखें तो भारत क्रय शक्ति के आधार पर विश्व की 3 बड़ी अर्थव्यवस्था है तथा जीडीपी के आधार पर विश्व के 5 बड़ी अर्थव्यवस्था में शामिल है। लेकिन इतनी भौतिक समृद्ध व विकास के बाद भी भारत में 31% बच्चे कुपोषित है तथा मानव विकास सूचकांक में भी भारत का प्रदर्शन इतना बेहतर नहीं है। इसका

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

मतलब हम भौतिक संपत्ति में समृद्ध है लेकिन वास्तविक संपत्ति का व्यापक अभाव है। इसका एक उदाहरण विश्व के 10 सबसे प्रदूषित शहरों में से 6 भारत के शहर हैं जो दर्शाते है कि पर्यावरण का क्षरण भारत में उच्चतम स्तर पर है।

पर्यावरण का क्षरण, जैवविविधता की हानि, पितृसत्तात्मक विचारधारा, सांप्रदायिकता आदि ऐसे तत्व है जो भारत में संपत्ति के क्षरण को बढ़ावा देते है। जैसे- विश्व बैंक द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि द्वारा भारत की जीडीपी को 30% तक बढ़ाया जा सकता है। यह आंकलन सिर्फ भौतिक लाभ से संबंधित है।

इस भौतिक लाभ के अलावा मातृ मृत्यु दर, कुपोषण में जो कमी होगी वह अलग है तथा महिलाओं के प्रति समानता की भावना के विकास से जो सामाजिक समरसता

व सौहार्द का माहौल स्थापित होगा वह अलग है। इसलिए विकास से भौतिक तथा वास्तविक दोनों संपत्तियों के सृजन को बढ़ावा दिया जा सकता है।

हालांकि संपत्ति के सृजन हेतु भारत के द्वारा बहुत से प्रयास किए गए हैं जैसे- पर्यावरण संरक्षण हेतु पर्यावरण संरक्षण Act 1986 व महिलाओं के विकास व सशक्तिकरण को बढ़ावा देने हेतु अनुच्छेद 14 के तहत समानता तथा विभिन्न योजनाओं के द्वारा भागीदारी में वृद्धि के प्रयास। इन्हीं सभी प्रयासों के परिणामस्वरूप ही भारत में इस मानसिकता का विकास हुआ है कि एक जनजातिय क्षेत्र में निवास करने वाली महिला भी भारत के सर्वोच्च पद धारण करने की सोच सकती है जिसका उदाहरण नवनिर्वाचित राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु है।

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते है कि वास्तविक संपत्ति वो नहीं है जो हम

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

देख पा रहे हैं बल्कि वो है जो बाहरी तौर पर भले ही दिखाई न दे लेकिन किसी भी देश व व्यक्ति के विकास व शांति को बढ़ावा देती है। वर्तमान में जो आंतरिक संतुष्टि हम अपने अच्छे कार्यों के बाद प्राप्त करते हैं या वो विचारधारा जो व्यक्ति को कठिन परिस्थिति में भी उठने का साहस प्रदान करती है या जो किसी देश को समस्याओं के बाद भी अपने लोगों के उत्थान के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करती है। वास्तविक संपत्ति है।

गांधी जी के अनुसार सबसे बड़ा कार्य अपने आप को मानव सेवा में लगा देना है क्योंकि इससे जो संपत्ति या शांति मनुष्य के हृदय में सृजित होगी वह दिखाई तो नही देगी लेकिन देश के विकास व लोगों के जीवन स्तर में बेहतरी के रूप में उसके परिणाम अवश्य प्राप्त होंगे।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

जब हम किसी स्थिति को बदलने में सक्षम नहीं होते हैं, तो हमारे समक्ष स्वयं को बदलने की चुनौती होती है

लंदन के एक पादरी की कब्र पर निम्न पंक्तियां का उल्लेख पाया गया है जिसमें लिखा है —

"जब मैं युवा हुआ करता था तो मेरी कल्पना-शक्ति बहुत अधिक थी और मुझे ऐसा लगता था जैसे मैं पूरे विश्व को बदल सकता हूं लेकिन जैसे मैं उम्र बढ़ी मैंने सोचा विश्व को बदलना थोड़ा कठिन है इसलिए स्वयं के देश को बदलने का लक्ष्य मैंने बनाया। उम्र और बढ़ी तो मेरा लक्ष्य देश से हटकर समाज को बदलने का हो गया और इसी तरह समाज से परिवार तक। लेकिन जब मैंने वृद्धावस्था में मैंने प्रवेश किया तो मुझे समझ में आया कि वास्तव में मुझे स्वयं को बदलना चाहिए था तथा स्वयं के बदलाव से शायद मैं समाज, देश तथा पूरे विश्व को बदलाव के लिए प्रेरित कर पाता।"

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

ये उक्तियाँ दर्शाती है कि बाहरी परिस्थितियों में बदलाव की अपेक्षा हमें स्वयं के अंदर उन बदलावों को लाना चाहिए जो हम बाहरी तौर पर अन्य लोगों मे देखना चाहते है। साथ ही हर बार आवश्यक नहीं कि बाहरी स्थिति हमारे कंट्रोल में हो इसलिए स्वयं में परिवर्तन लाना सबसे उत्कृष्ट उपाय है।

इसका उदाहरण हम भारत के स्वदेशी आंदोलन से ले सकते है। भारत के राष्ट्रवादियों द्वारा ब्रिटिश सरकार से काफी लंबे समय तक अपील की। जिसमें ब्रिटिशों से आग्रह किया गया कि भारत से होने वाले कपड़ों के निर्यात पर लंदन में लगने वाले टैक्स को हटाया जाए क्योंकि इससे भारतीय कपड़ो का मूल्य बहुत अधिक बढ़ जाता था। साथ ही इग्लैंड के वस्त्रों को मिलने वाले सब्सिडी लाभ व आयात की छूट को समाप्त किया जाए।

क्योंकि उस समय इंग्लैंड के

वस्त्रों से भारतीय बाजार भर गया था। तथा भारतीय कपड़ों की अपेक्षा से सस्ते होते थे। इन्हीं के परिणामस्वरूप भारतीय वस्त्र उद्योगों का पतन शुरू हो गया। तथा वस्त्र पर आधारित शहर सुनसान हो गए। इसमें मछली-पट्नम का नाम प्रमुख है।

इन सभी बाहरी स्थितियों पर भारतीयों का नियंत्रण नहीं था एवं आग्रह के बाद भी कोई बदलाव नहीं हुआ तो भारतीय राष्ट्रवादियों द्वारा ब्रिटिश वस्त्रों का बहिष्कार व खादी के प्रयोग को बढ़ावा देने का अभियान चलाया। जिसे काफी सफलता भी प्राप्त हुई। इसी के परिणाम में ब्रिटिश आयात 2 साल में 50% तक कम हो गया था। भारतीय राष्ट्रवादियों का यह आंदोलन दर्शाता है कि जब आप बाहरी स्थितियों में परिवर्तन नहीं कर सकते तो बेहतर विकल्प है स्वयं को परिवर्तित करना।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

गांधी जी के विचार भी काफी प्रासंगिक है " कि जो परिवर्तन आप दूसरों में देखना चाहते है वो पहले स्वयं में लाए"। क्योंकि बिना स्वयं को परिवर्तित किए या स्वयं में सुधार किए दूसरे व्यक्तियों में बदलाव नही लाया जा सकता। वर्तमान में यह बहुत आम धारणा बन गई है कि हम पर्यावरण प्रदूषण के लिए सरकार को दोषी ठहराते है।

सरकार पर दोषारोपण कुछ हद तक ठीक है पूर्णतया नही क्योंकि हम स्वयं उन सभी गतिविधियों को संपादित करते है जिनसे पर्यावरण प्रदूषण होता है जैसे- खुले में कचरा फेंकना, पोलीथीन का प्रयोग व कचरे को खुले वातावरण में जलाना आदि। लेकिन दोष सिर्फ सरकार पर ही डालते है एवं स्वयं को दोषी मानते ही नही है। लेकिन सभी लोग ऐसे नहीं है। भारत के कुछ महान पर्यावरणविद् है जिन्होंने सरकार के

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

विरुद्ध जाकर भी पर्यावरण की सुरक्षा की।

उत्तराखंड के गौरा देवी व सुंदरलाल बहुगुणा का चिपको आंदोलन इस संदर्भ में लोकप्रिय है। जिसमें सरकार के द्वारा हिमालय क्षेत्र में पेड़ों की कटाई का आदेश पारित किया गया था। लेकिन स्थानीय लोगों को अपने पेड़ों एवं पर्यावरण से काफी लगाव था। जब उन्हें आदेश का पता चलता है तो उन्हें इस बात का भी ज्ञान होता है कि केंद्र सरकार के निर्णयों में परिवर्तन करना उनके हाथ में नहीं है।

इसलिए उपाय के रूप में उन्होंने स्वयं को पेड़ों के साथ चिपकाकर खड़ा किया तथा अधिकारियों से कहा कि उन्हें पेड़ के साथ उनको भी काटना पड़ेगा। पर्यावरण हेतु अपने प्राणों की परवाह न करने की प्रतिबद्धता के सामने सरकार झुक गई तथा पेड़ों की कटाई के आदेश को वापस ले लिया। जो दर्शाता है कि हो सकता है उपर तक व्यक्ति की

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

पहुँच न हो लेकिन अपनी प्रतिबद्धता को मजबूत कर तथा स्वयं में परिवर्तन कर बाहरी चुनौतियां का सामना भी किया जा सकता है तथा जीत भी हासिल की जा सकती है।

भारत पश्चिम एवं उत्तर दोनों तरफ से सुरक्षा संबंधी चुनौतियों का सामना कर रहा है जिसमें पाकिस्तान द्वारा निरंतर घुसपैठ व चीन की सीमा पर आक्रामकता प्रमुख है। लेकिन इन दोनों देशों पर समझौते, पंचशील सिद्धांत व पड़ोसी प्रथम जैसी नीतियों के अपनाने का प्रभाव भी नहीं पड़ा। इसलिए बाहरी तौर पर इन दोनों से निपटना मुश्किल है।

इसलिए आवश्यकता हो जाती है कि भारत अपने आप को सैन्य रूप से आधुनिकृत व तकनीकी रूप से सक्षम बनाए ताकि इस चुनौती हेतु स्वयं को तैयार किया जा सके। सेना के प्रशिक्षण को

अंतर्राष्ट्रीय स्तर का करना, साइबर अपराध व अंतरिक्ष अपराध संबंधी पहलों द्वारा सेना को हर स्तर पर प्रशिक्षित करना ताकि भारतीय सीमा पर बाहरी चुनौती से निपटा जा सके। इसलिए आंतरिक रूप से स्वयं को परिवर्तित करना ही इसका उपाय है क्योंकि भारत द्वारा किए गए समझौते इसमें अप्रभावी रहे हैं।

इसी संदर्भ में सावित्रीबाई फुले का जीवन भी एक आदर्श है। उनके समय पर पितृसत्तात्मक विचारधारा की पकड़ बहुत मजबूत थी तथा इसको कमजोर करने की कोशिश करना भी व्यर्थ प्रतीत होता है। इसके उपाय के रूप में उन्होंने पहले स्वयं को शिक्षित किया तथा इस धारणा को तोड़ा कि महिलाओं का महत्व केवल चारदीवारी तक सीमित होता है। इसके बाद उन्होंने महिला विद्यालय की स्थापना की तथा पितृसत्तात्मक विचारधारा पर प्रहार किया। लेकिन इसकी शुरुआत

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

स्वयं में परिवर्तन के द्वारा होती है क्योंकि जब तक हम अपने आप को यह अहसास नहीं दिलाते की हम कर सकते है या हमारे अंदर सक्षमता है तब तक बाहरी चुनौती की उपस्थिति या अनुपस्थिति महत्व नहीं रखती।

लेकिन जब हम स्वयं में परिवर्तन कर स्वयं को यह अहसास दिलाने में सक्षम हो जाते है कि हमारे अंदर भी काबिलियत है तो बाहरी चुनौती भी एक-न-एक दिन घुटने अवश्य टेक देती है। इसी प्रकार का उदाहरण बी.आर. अंबेडकर जी के जीवन से मिलता है। जिसमें उन्होंने पहले स्वयं को शिक्षित व मजबूत बनाया तथा उसके बाद समाज में व्याप्त अस्पृश्यता की लड़ाई लड़ी तथा इसमें विजयी भी प्राप्त की।

हाल ही में एक रिपोर्ट में यह बताया गया है कि 2020 में भारतीय साइबर क्षेत्र पर चीन के द्वारा लगभग 6 लाख

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

हमले किए गए। जिन हमलों का मुख्य उद्देश्य कोविड़ के कारण हुई आर्थिक हानि के साथ ही भारतीय अर्थव्यवस्था को स्थाई हानि पहुँचाना था। जिसके प्रभाव के रूप मे भारत की महत्वपूर्ण जानकारी भी बाहर जा सकती थी। जिसका प्रयोग भारत के अंतरिक्ष व रक्षा क्षेत्र के अनुसंधानों को हानि पहुँचाने के लिए किया जा सकता था।

इन हमलों के संदर्भ मे भारत के द्वारा स्थापित "राष्ट्रीय तकनीकी रिसर्च संगठन" (NTRO) व 'सर्ट-इन' (CERT-In) संगठनो द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा इन हमलों को अप्रभावी किया। इसलिए बाहरी चुनौती से हम लड़ नही सकते तो आवश्यक हो जाता है हम आंतरिक संस्थाओ को मजबूत व सक्षम बनाए। क्योंकि चीन से हमले न करने का आग्रह तो किया नही जा सकता। और अगर किया भी जाए तो सही बात को स्वीकारना चीन के सिंद्धातों के विरुद्ध है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इसी प्रकार की चुनौती पाकिस्तान के द्वारा भारतीय सीमा पर पैदा की जाती है। जिसमें अवैध घुसपैठ, आतंकवादियों को प्रशिक्षण देना व भारत भेजना, हवाला कारोबार का संचालन, जाली मुद्रा का व्यापार एवं अवैध अफीम की तस्करी आदि शामिल है। जिनके माध्यम से भारत की सुरक्षा व शांति के समक्ष संकट पैदा किया जाता है।

इस संकट के अप्रभावीकरण हेतु भारत के द्वारा सेना का आधुनिकीकरण, सैन्य गश्त में वृद्धि, एकीकृत सीमा प्रबंधन जैसी तकनीकों के माध्यम के साथ बाहरी सीमा की सुरक्षा को बढ़ाया है तथा राष्ट्रीय सुरक्षा Act 1980 व अपा Act (UAPA·Act 1986) के तहत आंतरिक स्तर पर इन गतिविधियों को रोकने हेतु प्रभावी प्रयास किए गए हैं।

प्रसिद्ध विद्वान मुकरात के द्वारा

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

कथित वाक्य काफी प्रासंगिक है :—

" बाहरी जीत की अपेक्षा, मैं
व्यक्ति की अपनी इच्छाओं पर जीत
को अधिक महत्वपूर्ण मानता हूँ "

मनुष्य के जीवन में यह बहुत स्वाभाविक घटना है कि वह हमेशा बाहरी तौर पर अधिकतर समस्याओं से निपटने की कोशिश करता है लेकिन हम अंदर विद्यमान डर, लालच, ईर्ष्या, द्वेष जैसी बुराइयों से लड़ने की कोशिश नहीं करता। वास्तव में देखें तो वास्तविक लड़ाई हमारी आंतरिक कमजोरियों के विरुद्ध है, जो हमारे मन में यह भावना पैदा करती है कि हम कमतर हैं या हम कोई विशिष्ट कार्य नहीं कर सकते;

दरअसल इसी लड़ाई की शुरुआत की बात की स्वीकृति के साथ होती है कि हमारे अंदर ये कमजोरियां विद्यमान है। जब तक अपनी कमजोरियों को स्वीकार कर लेते

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

है तो हमारी आधी जीत वहीं तय हो जाती है। तथा आधी उन कमजोरियों पर लगातार काम करके व अपनी गलतियों से सीखकर प्राप्त की जा सकती है. एक आई॰ए॰एस के अभ्यर्थी के जीवन में ये बात पूर्णतः प्रासांगिक बैठती है। जिसमें हर वक्त अपने लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता व समर्पण, अपनी गलतियों से सीखने की क्षमता तथा मन में ये भावना की हम कर सकते है. महत्वपूर्ण है.

अंत में निम्न पंक्तियां इस बात को दर्शाती है जैसे -

सकारात्मक सोच सगं, ऊर्जा और उत्साह लिए
जीतेंगे हारी बाजी को, मन में ये विश्वास लिए
ऊहापोह - अटकलें - अड़चने, अवसादों को हो अवसान,
हो बाधाएँ कितनी पथ में, चेहरे पर हो बस मुस्कान,
अंतर्मन में भरी हो ऊर्जा, नई शक्ति का हो संचार,

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

डटकर बाधाओं से लड़कर, जीतेंगे सारा संसार
ले संकल्प सृजन का मन में; नई शक्ति से हो भरपूर
धुन के पक्के उस राही से, मंजिल है फिर कितनी दूर।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)